ख़ुशी का पारा जब चढ़े,

ज्ञान का तीसरा नेत्र जब खुले,

बुद्धि को कहते तीसरा नेत्र,

ख़ुशी से हो रोमांच खड़े,

शिवबाबा को जो जितना याद करे,

बड़े-बड़े चित्र बना समझाना,

आइना बनना अन्धो के आगे

छि छि दुनिया की होगी सफाई,

विनाश में प्रकृति भी करेगी जो मदद

होवंहार विनाश से पहले,

ले लो जीवन्मुक्ति का बर्थ राइट,

जो बाप सिखलाते, उसे अमल में लाना
बेहद के बाप से, बेहद का वरसा है पाना

टाइम वेस्ट न कर,दैवी गुण धारण करने

चाहे बुजुर्ग,अनपढ़ युवा प्रवृति वाला हो व् छोटा बच्चा,

बाबा का हर बच्चा है विशेष ,विश्व के आगे

नेता, अभिनेता , वैज्ञानिक सब ढूंढ रहे,

अल्फ़ को न जाना, तो क्या जाना,

निश्च्यबुद्धि हो हमने , अल्फ़ को पा लिया

स्वधर्म पवित्रता में रह,प्रवृति के

विशेष आत्मा बन दिखाया

खुशहाल वो रहते जो सर्व के प्रिय बनत